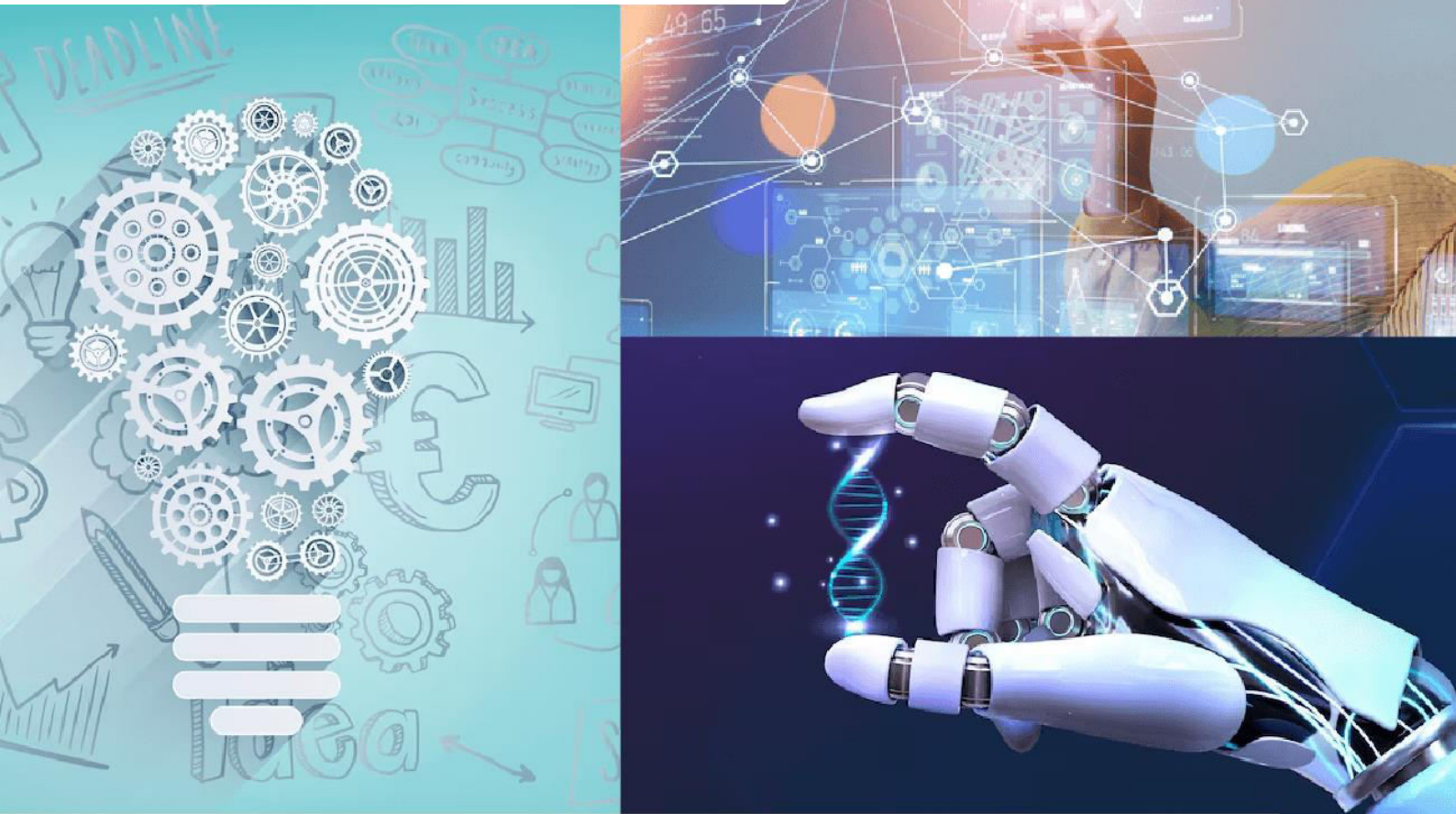




International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



एम.एन.राय एवं महात्मा गाँधी जी के मानवतावादी दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Rajesh Gupta

Associate Professor, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

शोध सार: मानव सभ्यता के विकास के इतिहास में मानव मूल्य, नैतिकता, समाज और व्यक्ति के संबंधों ने केंद्रीय भूमिका निभाई है। 20वीं शताब्दी का आधुनिक युग जहाँ वैज्ञानिक उपलब्धियों और तकनीकी क्रांति के शिखर पर पहुँचा, वहीं इसी काल में हिंसा, युद्ध, उपनिवेशवाद, आर्थिक शोषण और मानवाधिकारों के हनन जैसी गंभीर समस्याएँ भी सामने आईं। ऐसे समय में विभिन्न दार्शनिक और राजनीतिक चिंतन मानव समाज को नई दिशा प्रदान करने हेतु प्रस्तुत हुए। इन्हीं विचारधाराओं में नवमानववाद (Neo-Humanism) एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरा, जिसका उद्देश्य एक ऐसे मानव-समाज का निर्माण करना है जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता, तर्कशीलता और नैतिकता पर आधारित हो।

यह शोध-पत्र मनबेंद्रनाथ राय तथा महात्मा गांधी के मानवतावादी दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। दोनों विचारकों ने मानव केंद्रित दृष्टिकोण को अपने दार्शनिक चिंतन का आधार बनाया, किन्तु उनकी वैचारिक पद्धति, साधन और उद्देश्य में महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है। गांधी का मानवतावाद नैतिकता, सत्य, अहिंसा और आध्यात्मिकता पर आधारित है, जहाँ व्यक्ति का विकास आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से संभव माना गया है। इसके विपरीत, राय का नवमानववाद तर्क, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और बौद्धिक स्वायत्तता पर आधारित है, जिसमें मानव को एक स्वतंत्र और विवेकशील सत्ता के रूप में देखा गया है।

इस अध्ययन में दोनों विचारधाराओं के मूल सिद्धांतों, मानव प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण, समाज और राज्य की भूमिका, नैतिकता की अवधारणा तथा स्वतंत्रता के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। गांधी के चिंतन में जहाँ आध्यात्मिक मूल्यों और नैतिक अनुशासन को केंद्रीय स्थान प्राप्त है, वहीं राय के दर्शन में धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक चेतना और बौद्धिक स्वतंत्रता को प्राथमिकता दी गई है। इसके बावजूद, दोनों ही विचारकों का लक्ष्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना है, जिसमें मानव की गरिमा, समानता और स्वतंत्रता सुनिश्चित हो सके।

तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गांधी और राय के मानवतावादी दृष्टिकोण परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक भी माने जा सकते हैं। एक ओर गांधी का दृष्टिकोण नैतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान करता है, वहीं राय का दृष्टिकोण तर्कसंगत और वैज्ञानिक आधार को सुदृढ़ करता है। समकालीन वैश्विक संदर्भ में, जहाँ मानवाधिकार, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं, वहाँ इन दोनों विचारधाराओं का समन्वित अध्ययन एक संतुलित और समग्र मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

मूल शब्द: नवमानववाद, एम.एन. राय, महात्मा गांधी, वैज्ञानिक चेतना, सत्य-अहिंसा, मानव-मूल्य, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, आध्यात्मिकता, तर्कवाद।

I. परिचयात्मक

आधुनिक युग में मानवतावाद एक ऐसी विचारधारा के रूप में विकसित हुआ है, जिसने व्यक्ति को समस्त सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक चिंतन के केंद्र में स्थापित किया है। यह दृष्टिकोण मानव की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता और नैतिकता को सर्वोच्च मानते हुए समाज और राज्य की संरचना को भी मानव कल्याण के अनुरूप ढालने पर बल देता है। विशेष रूप से बीसवीं शताब्दी में, जब विश्व उपनिवेशवाद, युद्धों, वैचारिक संघर्षों और आर्थिक असमानताओं से जूझ रहा था, तब मानवतावादी चिंतन ने एक संतुलित और मानवीय दिशा प्रदान करने का प्रयास किया। इसी परिप्रेक्ष्य में एम. एन. राय तथा महात्मा गांधी के विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जिन्होंने अपने-अपने ढंग से मानवतावाद को एक विशिष्ट आयाम प्रदान किया।

महात्मा गांधी का मानवतावादी दृष्टिकोण भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक आधार पर निर्मित है। उन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम और करुणा को मानव जीवन के मूल तत्वों के रूप में स्थापित किया और यह माना कि मनुष्य का वास्तविक विकास उसके नैतिक उत्थान में निहित है। गांधी के अनुसार मानव केवल भौतिक अस्तित्व नहीं है, बल्कि वह एक नैतिक और

आध्यात्मिक सत्ता है, जिसका विकास आत्मसंयम, सेवा, त्याग और सहानुभूति के माध्यम से संभव है। उनके चिंतन में व्यक्ति और समाज के बीच एक घनिष्ठ संबंध स्थापित किया गया है, जहाँ व्यक्ति का कल्याण समाज के कल्याण से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार गांधी का मानवतावाद व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाता है और उसे नैतिक अनुशासन के माध्यम से सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में प्रेरित करता है।

इसके विपरीत, एम. एन. राय का मानवतावादी दर्शन आधुनिक, तर्कप्रधान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसे उन्होंने नवमानवतावाद के रूप में प्रतिपादित किया। राय ने मानव को एक स्वतंत्र और विवेकशील प्राणी के रूप में देखा, जो अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है और जिसके विकास में तर्क, विज्ञान और बौद्धिक स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उनके अनुसार किसी भी प्रकार की धार्मिक या आध्यात्मिक सत्ता के अधीन मानव की स्वतंत्रता सीमित हो जाती है, इसलिए उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक चेतना को मानव विकास का आधार माना। राय का मानवतावाद व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय पर आधारित है, जिसमें व्यक्ति को अपने विचारों और कार्यों के लिए व्यापक स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

यद्यपि गांधी और एम. एन. राय के विचारों में कई मौलिक भिन्नताएँ विद्यमान हैं, फिर भी दोनों के मानवतावादी दृष्टिकोण का मूल उद्देश्य मानव की गरिमा और स्वतंत्रता की रक्षा करना है। गांधी का दृष्टिकोण जहाँ नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित है, वहीं एम. एन. राय का दृष्टिकोण तर्क और वैज्ञानिक सोच पर आधारित है। गांधी मानव के आंतरिक विकास और नैतिक अनुशासन पर बल देते हैं, जबकि एम. एन. राय बाह्य सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन और बौद्धिक स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते हैं। इस प्रकार दोनों विचारकों के दृष्टिकोण भिन्न होने के बावजूद एक-दूसरे के पूरक प्रतीत होते हैं।

समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जहाँ मानवाधिकार, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और नैतिक मूल्यों के प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं, वहाँ गांधी और एम. एन. राय के मानवतावादी दर्शन का पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। आज का समाज एक ओर तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के कारण तीव्र गति से विकसित हो रहा है, वहीं दूसरी ओर नैतिक संकट, सामाजिक असमानता और वैचारिक द्वंद्व भी बढ़ रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में गांधी का नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण तथा एम. एन. राय का तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण दोनों ही एक संतुलित और समग्र समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

अतः इस अध्ययन का उद्देश्य महात्मा गांधी और एम. एन. राय के मानवतावादी दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि उनके विचार किस प्रकार आज के समय में भी प्रासंगिक हैं और समाज को एक अधिक मानवीय, न्यायपूर्ण और संतुलित दिशा प्रदान कर सकते हैं। यह अध्ययन न केवल दार्शनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में भी इसकी उपयोगिता स्पष्ट होती है, क्योंकि यह मानव केंद्रित विकास की अवधारणा को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

एम.एन. राय का नवमानववाद तार्किकता, विज्ञानवाद, धर्मनिरपेक्षता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लोकतंत्र पर आधारित है। वे आध्यात्मिकता और अधिभौतिक विश्वासों को मानव प्रगति में बाधा मानते हैं तथा “रेडिकल ह्यूमनिज़्म” के माध्यम से विवेकाधारित मानवीय समाज की स्थापना का पक्ष लेते हैं। इसके विपरीत, महात्मा गांधी का नवमानववाद आध्यात्मिक, नैतिक एवं कर्मप्रधान आदर्शों से युक्त है। सत्य, अहिंसा, करुणा, प्रेम, आत्मानुशासन, ग्राम-स्वराज और सर्वोदयी समाज की कल्पना उनकी विचारधारा के मूल में है। गांधी मानव विकास को केवल बौद्धिक या भौतिक उन्नति से नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतरंग मूल्यों के सशक्तिकरण से जोड़ते हैं। अतः यह शोध दोनों विचारकों के नवमानववादी चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि- मानव समाज के उत्थान हेतु दोनों की अवधारणाओं में कहाँ समानता है?, किन बिंदुओं पर उनके विचार भिन्न दिशा ग्रहण करते हैं? और वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में कौन-सा दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त या समन्वयकारी है?

एक ऐसे समय में जब भौतिक प्रगति तो बढ़ रही है, किंतु मानव संवेदनाएँ और नैतिक मूल्य संकट में हैं- एम.एन. राय और गांधी के नवमानववादी विचार आधुनिक समाज के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। इस अध्ययन का मूल उद्देश्य एक संतुलित, न्यायपूर्ण, नैतिक एवं मानवतावादी समाजनिर्माण हेतु इन दोनों विचारधाराओं की उपयोगिता को समझना है।

मानवेन्द्रनाथ राय एक मानववादी विचारक है जिनके दर्शन में समाजवादी एवं उदारवादी मूल्यों का समन्वय देखने को मिलता है। राय ने उदारवादी मानववाद की आलोचना की है क्योंकि उदारवादी मानववाद व्यक्तिवाद पर आधारित है। उदारवादी मानववाद का खण्डन करते हुए उन्होंने मार्क्सवादी मानववाद का भी खण्डन किया है। इसके अंतर्गत समाजवाद के नाम पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कुचला जाता है। उन्होंने गाँधीवादी मानववाद तथा अरविन्द एवं टैगोर के मानववाद को आध्यात्मिक ढकोसला बताया। मानववाद एक अतिप्रभावशाली दर्शन है जिसकी उत्पत्ति हम ग्रीक चिंतन में देख सकते हैं। सोफिस्टों के चिंतन में मानव ही चिंतन की धुरी रहा है। जहाँ कुछ दार्शनिकों ने धार्मिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं वहीं अन्यो ने इसे भौतिकवादी दर्शन के साथ जोड़कर अपना योगदान सुनिश्चित किया है। राय का मानववाद भी भौतिकवादी है, जो यथार्थवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण में विश्वास

करता है। राय के विचारों में क्रमिक परिवर्तन देखते हैं। आरम्भ में वे मार्क्सवादी विचारक थे। 1940-47 के दौरान राय मार्क्सवाद से उग्रवाद की ओर प्रेरित हुए और 1947-54 तक उग्रवाद से मानववाद की ओर। उनके इन विचारों की यात्रा के संदर्भ में निम्न ऐतिहासिक घटनाओं को देखा जा सकता है।

सर्वप्रथम, कोमिंटर्न से निकाले जाने के बाद और भारतीय राजनीति में प्रवेश करने पर राय ने अपने विचारों का पुनर्निरीक्षण किया कि जिस प्रकार से सोवियत संघ, मैक्सिको व चायना में कम्युनिस्ट पार्टी के शासन के तहत मानव स्वतंत्रता सीमित हो गयी थी तथा जर्मन में संसदीय प्रजातंत्र की कमियों के कारण फासीवाद का उदय होने से मानव स्वतंत्रता को आघात पहुँचा था। राय ने अपने दर्शन के माध्यम से मानव की स्वतंत्रता को स्थापित करने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में उनके प्रमुख कार्य निम्न हैं-

सर्वप्रथम, उन्होंने कांग्रेस में ही उग्र कांग्रेसियों का एक अलग संगठन बनाया 1937 में उन्होंने Independent India नामक साप्ताहिक पत्र की शुरुआत की जिसका नाम बाद में बदल कर Radical humanist कर दिया गया।

उन्होंने 1946 में Radical Party की सभा में सर्वप्रथम अपने दर्शन के प्रमुख बिन्दुओं को उल्लेख किया है; जो निम्न हैं-क; उग्रवाद, मार्क्सवाद को पूर्ण रूप से नकारा नहीं है वरन् यह मार्क्सवाद का पुनर्निर्माण का प्रयास है। ख; मानव या व्यक्ति समाज का केन्द्र होना चाहिए। साम्यवादी व्यवस्था या फासीवादी व्यवस्था दोनों ने ही मानव के अस्तित्व को वर्ग या राष्ट्र की परिछाया के तहत कर दिया है। ग साम्यवाद भी अब मानव की स्वतंत्रता को सुरक्षित नहीं रख सका है, अतः नई क्रान्ति किसी अन्य आधार से आरंभ होगी। घ कोई विचारधारा या दर्शन किस हद तक क्रान्तिकारी है, इसका मापन इस आधार पर किया जा सकता है कि वह किस हद तक मानव की स्वतंत्रता उपलब्ध करा पा रही हैं। ड किसी भी प्रकार के सत्ता का केन्द्रीकरण मानव की स्वतंत्रता के खिलाफ है, अतः समाज में विकेन्द्रीकरण होना चाहिए।

“राय मानव की पूर्ण स्वतंत्रता और व्यक्तिवाद में विश्वास करते हैं।” उपर्युक्त संदर्भ में राय ने उग्र मानववाद को परिभाषित किया है- यह चिंतन मानववादी है, क्योंकि यह मनुष्य के अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहता है और यह उग्रवादी है अर्थात् परिवर्तनकारी है क्योंकि अन्य चिंतनों की तुलना में मात्र अमूर्तविचारों पर बल न देकर व्यक्ति जो कि समाज का आधार है; उस पर महत्व देता है।

1946 के अंत तक आते आते पुनः Radical Democratic Party की सभा में राय ने नवमानववाद की संकल्पना दी। यहाँ उन्होंने RDP के राजनीतिक कार्यों की समापन कर दिया और बताया कि अब यह पार्टी सामाजिक पुनरुत्थान और जागरण का कार्य करेगी। उन्होंने दलगत राजनीति को स्वतंत्रता का विरोधी बताया। राय के अनुसार मानवता आज संकट के दौर से गुजर रही है। नैतिक मूल्यों का सामाजिक जीवन में अवमूल्यन से मानवीय स्वतंत्रता को आघात पहुँचा है। यहाँ तक कि आज साम्यवादी व्यवस्था में भी मानवीय स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं है। आज प्रश्न पूंजीवादी या समाजवादी में से किसी एक व्यवस्था को चुनने का न होकर यह है कि मानव की स्वतंत्रता को किस प्रकार सुरक्षित रखा जाए। राय ने अपने मानववाद को अपने से पूर्व सभी मानववादी विचारों से भिन्न बताया जहाँ पित्रिमः सिरोक्रीमः टैगोर मैनहाइम और घोश जैसे विचारक किसी सार्वभौमिक सत्ता धर्म आदि में मानवीय समस्याओं की समाधान की खोज करते हैं। जबकि राय के अनुसार उनका मानववाद इस विश्व से परे ना होकर भौतिकवादी विश्व में मानव की समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर है। राय का नव मानववाद प्राकृतिक विवेक व धर्मनिरपेक्ष चेतना पर आधारित है, इसके तीन प्रमुख तत्व हैं- 1 स्वतंत्रता 2 विवेक 3 नैतिकता

गाँधी के संदर्भ में हम राय के विचारों में परिवर्तन देखते हैं। आरंभ में वे गाँधी के कटु आलोचक रहे पर आपने जीवन के अंतिम वर्षों में गाँधी के प्रशंसक बन गये सर्वप्रथम गाँधी पर राय के विचार को हम उनकी पुस्तक India and Transition में देखते हैं-जहाँ लेनिन गाँधी को एक क्रांतिकारी नेता मानते थे, वही राय ने गाँधी को एक प्रतिक्रियावादी के रूप में प्रस्तुत किया है। अपनी पुस्तक में उन्होंने गाँधी को मध्य कालीन विचारधारा का चिंतक माना है क्योंकि भारतीय धर्म व संस्कृति के पुनर्जागरण पर बल दे रहे थे। लेनिन को सम्बोधित करते हुए राय ने लिखा है कि लेनिन ने स्वयं कहा है कि क्रांति के लिए क्रांतिकारी विचार धारा होना आवश्यक है परंतु गाँधी जी की विचार धारा किसी भी अर्थ में क्रांतिकारी नहीं कही जा सकती। राय ने खासकर गाँधी जी के असहयोग आंदोलन की आलोचना की। राय एवं गाँधी के विचारों में समानता और असमानता दोनों रूप में दृष्टिगत होती है।

समानता :

- दोनों ही मानवीय स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता में विश्वास करते हैं।
- दोनों ही साध्य एवं साधन की पवित्रता में विश्वास करते हैं।
- दोनों ही राजनीति में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करना चाहते हैं।
- दोनों शक्ति एवं दल पर आधारित राजनीति को समाप्त करना चाहते हैं।
- राज्य की सत्ता को दोनों ही सीमित करना चाहते हैं। प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण पर बल दोनों का है।
- दोनों ही विश्व बन्धुत्व की बात करते हैं।
- दोनों ही क्रांति के आहिंसात्मक स्वरूप को स्वीकार करते हैं।

- सामाजिक क्रांति का मुख्य साधन शिक्षा को दोनों ने माना है।

असमानता :

- जहाँ गांधी का दर्शन आध्यात्मिक है वहीं राय का दर्शन हाब्स और डार्विन जैसे विचारकों से प्रेरित होने के कारण भौतिकवादी है।
- गांधी सार्वभौमिक सत्ता अथवा ईश्वर जैसी विचारों में आस्था रखते हैं जबकि राय इन विचारों में आस्था नहीं रखते।
- राय ने भारत के विकास के लिए औद्योगिकरण पर बल दिया जब कि गांधी कुटीर उद्योगों की बात करते हैं।
- दोनों के प्रजातंत्र में संरचनात्मक भिन्नता है जहाँ गांधी का प्रजातंत्र समुद्री तरंगों के समान सत्ता का समानान्तरण वितरण की बात करता है वहीं राय की उग्र प्रजातंत्र की अवधारणा पिरामिडीय आकार की है।

सन् 1931 के बाद गांधी के संदर्भ में राय की विचार धारा में बदलाव आया। यह परिवर्तन हमें मुख्य रूप से दो कारण के रूप में दृष्टिगत है-

कम्युनिष्ट इंटरनेशनल के द्वारा राय का विरोध एवं 1946 के भारतीय आम चुनावों में Radical Democratic Party को हार।

1948 में गांधी की हत्या के बाद अप्रैल 1948 में अपने लेख 'शहिद का संदेश शहिद के प्रति' (Message to Marty and homage to Marty) में गांधी जी को कर्मयोगी माना है। खासकर गांधी के द्वारा प्रतिपादित राजनीति के आध्यात्मिकरण को प्रशंसा की। उन्होंने माना कि गांधी शक्ति पर आधारित राजनीति को समाप्त करना चाहते थे। उनके अहिंसा का तात्पर्य 'साधन और साध्य' को पवित्रता से था। गांधी का दृष्टिकोण वैश्विक था, वे विश्व बंधुत्व की बात करते थे जो सराहनीय है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि एम.एन. राय और महात्मा गांधी दोनों का नवमानववाद मानव-केंद्रित चिंतन पर आधारित है। दोनों विचारक मानते थे कि मनुष्य ही समाज-परिवर्तन का मूल आधार है और उसकी उन्नति ही वास्तविक प्रगति है। दोनों मानवता, समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और विश्व-शांति के पक्षधर थे तथा हिंसा, शोषण, अन्याय और भेदभाव का विरोध करते थे। व्यक्ति की नैतिक क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों को दोनों विचारकों ने उच्च स्थान दिया। दोनों ने औपनिवेशिक शोषण की आलोचना करते हुए स्वराज और आत्मनिर्भर समाज की वकालत की। यद्यपि उनके तरीके भिन्न थे, परंतु दोनों का उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जिसमें हर व्यक्ति को स्वतंत्रता, सम्मान और बराबरी का अधिकार प्राप्त हो। साथ ही दोनों विचारधाराएँ व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में अग्रसर थीं। यह समानताएँ स्पष्ट करती हैं कि दोनों चिंतन मानव कल्याण और नैतिक प्रगति के पथ प्रदर्शक हैं।

एम.एन. राय और महात्मा गांधी के नवमानववादी चिंतन में कई मूलभूत अंतर भी मौजूद हैं। एम.एन. राय का नवमानववाद तार्किक, वैज्ञानिक और धर्म-निरपेक्ष दृष्टिकोण पर आधारित है। वे धार्मिक आस्था को मानव की स्वतंत्र बौद्धिक प्रगति में बाधक मानते हैं। उनका विश्वास था कि मनुष्य की मुक्ति केवल विज्ञान, विवेक और आलोचनात्मक चेतना के विकास से संभव है। वे एक वैज्ञानिक लोकतांत्रिक समाज के निर्माण की बात करते हैं जहाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वोपरि हो।

इसके विपरीत, गांधी का नवमानववाद नैतिक, आध्यात्मिक और अहिंसात्मक मूल्यों पर आधारित है। वे धर्म को मानवता का आधार मानते थे और सत्य-अहिंसा को मानव विकास का सर्वोच्च साधन। गांधी का लक्ष्य एक ग्राम-आधारित, आत्मनिर्भर और श्रमप्रधान समाज का निर्माण था। जहाँ राय राजनीति और लोकतंत्र को व्यक्ति की स्वतंत्रता से जोड़ते हैं, वहीं गांधी समाज की सेवा, नैतिक उत्थान और आत्मानुशासन को मानव उन्नति का प्रमुख मार्ग मानते हैं। एक प्रमुख अंतर यह भी है कि जहाँ राय ने औद्योगिकीकरण और विज्ञान को प्रगति का साधन माना, वहाँ गांधी मशीनवाद को मानव मूल्यों के लिए खतरनाक बताते थे। इस संदर्भ में उनका समाजवाद भी अलग-अलग स्वरूप ग्रहण करता है: राय का समाजवाद लोकतांत्रिक और वैज्ञानिक है, जबकि गांधी का समाजवाद नैतिक और सामुदायिक। सार रूप में दोनों चिंतनों में दिशा और साधनों का अंतर होते हुए भी लक्ष्य समान है- एक ऐसा नया मानव और समाज का निर्माण जो नैतिक, स्वतंत्र, न्यायपूर्ण और मानवतावादी हो।

II. निष्कर्ष

एम.एन. राय और महात्मा गांधी दोनों ही नवमानववाद के माध्यम से मानव समाज को उच्चतर विकास स्तर तक पहुँचाने की कल्पना करते हैं, किंतु उनके दृष्टिकोण व दार्शनिक आधार में स्पष्ट अंतर है। एम.एन. राय का नवमानववाद तार्किकता, भौतिक यथार्थवाद और वैज्ञानिक चेतना पर आधारित है। वे धर्म तथा किसी भी अलौकिक विश्वास को मानव की प्रगति में बाधक मानते हैं और समाज का निर्माण विवेकशील, स्वतंत्र एवं लोकतांत्रिक नागरिकों के आधार पर करना चाहते हैं।

दूसरी ओर, गांधी मानते हैं कि मानव का वास्तविक विकास आध्यात्मिकता, सत्य, अहिंसा और करुणा की भावना द्वारा ही संभव है। गांधी का नवमानववाद सामाजिक नैतिकता, श्रम-प्रधानता, ग्राम-आधारित स्वराज और सर्वोदयी समाज की स्थापना की ओर अग्रसर है।

तुलनात्मक रूप से, राय का नवमानववाद बौद्धिक-वैज्ञानिक है जबकि गांधी का नवमानववाद नैतिक-आध्यात्मिक। फिर भी, दोनों के विचारों का अंतिम लक्ष्य मानवता का कल्याण, विश्व-शांति और नैतिक समाज की स्थापना करना है जो कि एक समान है।

आज की भौतिकवादी एवं तकनीकी दुनिया में एम.एन. राय की वैज्ञानिक चेतना अत्यंत प्रासंगिक है, वहीं हिंसा, विभाजन, नैतिक पतन और मानवहितों के संकट से जूझती वैश्विक व्यवस्था में गांधी का नवमानववाद समान रूप से आवश्यक है। दोनों विचारों के समन्वय से एक ऐसे नवमानववाद का निर्माण हो सकता है जो सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, नैतिकता, वैज्ञानिक सोच और शांति को एक साथ लेकर चले। यही आधुनिक मानव समाज के लिए उपयुक्त दिशा का संकेत है।

संदर्भ

1. राय, एम.एन. (2018). नवमानववाद : सिद्धांत और व्यवहार. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. राय, एम.एन. (2016). मानव-मूल्य और राजनीति. ज्ञान भारती, लखनऊ।
3. राय, एम.एन. (2015). रेडिकल ह्यूमनिज़्म का दार्शनिक आधार. भारतीय विद्या भवन, मुंबई।
4. गांधी, महात्मा (2015). हिन्द स्वराज. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
5. गांधी, महात्मा (2013). सत्य और अहिंसा दर्शन. नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
6. अग्रवाल, रघुनंदन (2010). गांधीवादी विचार और मानव समाज. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. मिश्रा, अनिल (2017). एम.एन. राय : चिंतन और नवमानववाद. ज्ञान सागर प्रकाशन, दिल्ली।
8. सिंह, मोहन (2019). गांधी और नवमानववाद. राज पब्लिशिंग, जयपुर।
9. शुक्ल, वी.एन. (2014). भारतीय दर्शन में मानवतावाद. ईस्टर्न बुक कंपनी, लखनऊ।
10. वर्मा, राकेश (2016). वैज्ञानिक मानववाद के प्रवर्तक एम.एन. राय. राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट, दिल्ली।
11. पांडे, सुनीता (2020). मानवाधिकार और गांधीवाद. एपीएच पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
12. शर्मा, रतनलाल (2013). आधुनिक भारतीय चिंतन. मोतीलाल बुक डिपो, वाराणसी।
13. जोशी, नरेन्द्र (2015). नवमानववाद और मानव नैतिकता. आशा प्रकाशन, भोपाल।
14. कौर, गुरजीत (2019). समकालीन मानवीय चुनौतियाँ और नवमानववाद. कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
15. सिंह, दिनेश (2018). गांधी और मानव कल्याण दर्शन. राजहंस पब्लिशर्स, दिल्ली।
16. चौहान, पूनम (2017). इतिहास और दर्शन में मानवतावाद. साहित्य भवन, मुंबई।
17. आर्य, हेमंत (2021). वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक मानववाद. शिक्षा निकेतन, जयपुर।
18. गोस्वामी, ममता (2019). गांधीवाद का सामाजिक पक्ष. अटलांटिक पब्लिशर्स, दिल्ली।
19. यादव, उर्मिला (2020). समतामूलक समाज और गांधी. राज प्रकाशन, पटना।
20. गंगवार, अनिल (2022). मानवता और विज्ञान : एक तुलनात्मक विमर्श. दीपशिखा प्रकाशन, दिल्ली।

International Journal of Advanced Research in Education and Technology (IJARETY)